25

शब्दार्थालंकार-शब्दालंकार

मानव सदैव सौन्दर्य के पूजक होते हैं। कवियों ने प्राचीनकाल से ही अलंकारादि का प्रयोग किया था। इतिहास पुराणादि के समान अलंकारशास्त्र भी अति प्राचीन है। कवियों ने जब पद्यादि की सर्जना की तब ही स्वत: अलंकारादि कृतियों में समाहित हो गये। वैदिक साहित्य में भी अलंकारशास्त्र का प्रयोग विद्यमान है। जैसे - ऋग्वेद के उषा सूक्त में उषा देवी के वर्णन के अवसर में उपमादि अलंकार का प्रयोग दिखाई देता है। ऋग्वेद में अतिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग देखा जाता है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीती।।

यहाँ अलंकार कवि वाणी से स्वत: ही आया है न कि प्रयत्न से। शरीर से लावण्य कभी भी पृथक् नहीं होता उसी प्रकार शब्दार्थमय काव्य शरीर से अलंकार पृथक् नहीं होता। जैसे निश्चय ही वलय कुण्डलादि मानव देह की शोभा को सम्पादित करने वाले अलंकार शब्द से कहे जाते हैं उसी प्रकार अनुप्रास रूपाकादि शब्द और अर्थ की शोभा को सम्पादित करते हुए रस को उपकृत करते हैं। अतएव अनुप्रास रूपाकादि अलंकार पद से वाच्य होते हैं। अलंकार ही शब्दार्थमय काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं। जैसे आग में उष्णत्व धर्म होता है वैसे ही अलंकार का सौन्दर्य धर्म होता है। अतएव वामन ने कहा है - ''सौन्दर्यमलंकार:''। जयदेव कहते है कि आग में उष्णराहित्य कदापि संभव नहीं है उसी प्रकार काव्य भी अलंकार रहित कदापि नहीं होता। जयदेव ने कहा है -

अंगीकरोति य: काव्यं शब्दार्थावनलंकृती।
असौ न मन्यते कस्मात् अनुष्णमनलंकृती।।

प्रस्तुत पाठ में हम कुछ अलंकारों के लक्षण, उनका प्रयोजन, अलंकारों के भेद आदि विषय की संक्षेप में समालोचना करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- अलंकारों के प्रयोजन को जान पाने में;
- अलंकार के भेद-उपभेद समझ पाने में;
- शब्दालंकार को पद्यों से पहचान पाने में;
- शब्दार्थलंकार में विद्यमान अलंकार को जान पाने में;
- कवि निर्मित श्लोक में अलंकारों का निर्णय कर पाने में;
- स्वयं अलंकारों का प्रयोग करके श्लोक रचना कर पाने में;
- उदाहरण में लक्षण का समन्वय कर पाने में और;
- श्लोकादि में अलंकार चमत्कार को समझ पाने में।

25.1 अलंकार लक्षण

लोक प्रसिद्ध यह अलंकार शब्द अलम् उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करने पर बनता है। अलंकार विषयक शास्त्र को अलंकारशास्त्र कहा जाता है। अलंकार किसे कहते है इस विषय में दण्डी ने कहा है -**काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते। अलंक्रियते अनेन इति अलंकार:** यह वामन आनन्दवर्धन आदि ने परिभाषित किया है। मम्मटाचार्य के मत में शब्दार्थमय काव्यशरीर के सौन्दर्यवर्धक उपमादि अलंकार होते हैं। जैसे -

'उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलंकारास्ते अनुप्रासोपमादय:॥

अलंकार प्रथमतया वाच्य लक्ष्य और व्यंग्यार्थ की शोभा बढ़ाते हैं। उसके बाद वाच्यलक्ष्यदि अर्थातिशयमुख से संभावित मुख्य रस को उपस्थित करते हैं। लोक में भी शुरू में अलंकार कण्ठादि अंगों की शोभा बढ़ाते हैं। उसके बाद अलंकार कण्ठादि अंगों के उत्कर्षाधन के द्वारा शरीर को उपस्थित करते हैं। पण्डितराज जगन्नाथ अपने ग्रन्थ रसगंगाधर में अलंकार का निर्देश करते हैं - ''अथास्य प्रागभिहित लक्षणस्य काव्यात्मनो व्यंग्यस्य रमणीयता प्रयोजका: निरूप्यन्ते।'' विश्वेश्वर पण्डित के मत में तो अलंकार रसोपकारक होता है। अलंकार अर्थद्वारा रस का उपकार करता है। जैसा कि अलंकार कौस्तुभ में कहा है- **''तं विना शब्दासौन्दर्य मपि नास्ति मनोहरम्।''**

''अर्थालंकार रहिता विधेवेव सरस्वती॥''

कविराज विश्वनाथ साहित्यदर्पण के दशमोल्लास में अलंकार का वर्णन करते हुए कहते हैं -

टिप्पणी

शब्दार्थयोरास्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्गारास्तेऽङ्गदादिवत्।।

जैसे केयूरादि शरीरशोभातिशय से आत्मा को उपकृत करते हैं। उसी प्रकार अनुप्रास, उपमादि अलंकार शब्दार्थ शोभातिशय से काव्यात्मभूत रसादि के उपकारक होते हैं। अलंकार अस्थिर होते हैं। अतएव उनकी गुणवत् आवश्यक स्थिति है। अर्थात् गुण भी उत्कर्षक होते हैं किन्तु वे गुण रस के स्थिर धर्म स्वरूप विशेष होते हैं।

अलंकार शब्द और अर्थ के अस्थिर धर्म है और शब्दार्थ द्वारा रस को उत्कर्ष करते हैं। यह ही अलंकारों का प्रयोजन है कि शब्दार्थ द्वारा रसादि को उपकृत करते हैं। अलंकार शब्द दो प्रकार से निष्पन्न होता है। अलंकृतिः अलंकार यह व्युत्पत्ति भाव पक्ष में है, अलंक्रियते अनेन इति अलंकार यह व्युत्पत्ति करण पक्ष में है।

25.2 अलंकारों के प्रकार

प्रायः अलंकार दो प्रकार का होता है। शब्दालंकार और अर्थालंकार। कुछ की नीति में उभयालंकार भी होता है। अनुप्रास आदि शब्दालंकार और उपमारूपकादि अर्थालंकार हैं। पुनरूक्तवदाभासालंकार शब्दार्थालंकार अर्थात् उभयलंकार होता है। शब्दालंकार में शब्द की ही प्रधानता होती है और अर्थालंकार में अर्थ की प्रधानता होती है।

जो अलंकार शब्दाश्रित हैं वे शब्दालंकार कहे जाते हैं। ''शब्दपरिवृत्त्यसहत्वम्'' जहाँ होता है अर्थात् जो अलंकार शब्द परिवर्तन को सहन नहीं करते, प्रयुक्त शब्द के स्थान पर पर्यायवाचक शब्द के प्रयोग को नहीं सहन करते है। उस अलंकार में शब्द की सत्ता होती है। जब शब्द परिवर्तन होता है तब अलंकार भी नष्ट हो जाता है। अतः इस प्रकार की स्थिति जहाँ होती है वे शब्दालंकार होते हैं। जो अलंकार अर्थाश्रित होते हैं उनको अर्थालंकार कहते हैं। ''शब्दपरिवृत्तिसहत्वम्'' जहाँ होता है अर्थात् जो अलंकार शब्द परिवर्तन को सहन करते है, प्रयुक्त शब्द के स्थान पर पर्यायवाचक शब्द के प्रयोग का सहन करते हैं। अर्थालंकार में अर्थ की सत्ता होती है। जब अर्थ परिवर्तन होता है तब ही अलंकार नष्ट नहीं होता है। अतः इस प्रकार की स्थिति जहाँ होती है वहाँ अर्थालंकार होते हैं।

वस्तुतः शब्दालंकार ध्वनि अर्थात् नाद का अलंकार होता है उसके सुनने से आनन्द पैदा होता है। अर्थालंकार अर्थ का अलंकार होता है। शब्दालंकार शरीर होता है। अर्थालंकार उसका चिदानन्दस्वरूप होता है। शब्दालंकार मानव के मन में रूप का आलोक प्रदान करता है। अर्थालंकार चिन्मयरूप से चित्त को आलोकित करता है। शब्दालंकार में शब्द का परिवर्तन संभव नहीं है, परन्तु अर्थालंकार में तो शब्द का परिवर्तन संभव है।

शब्दालंकार, अर्थालंकार और शब्दार्थालंकार (उभयालंकार) भेद से अलंकार तीन प्रकार का होता है।

टिप्पणी

25.3 अलंकार का प्रयोग

अलंकार सौन्दर्य है। सुन्दर वस्तु जहाँ होती है वहाँ पर हमारे नेत्र दौड़ते हैं। सौन्दर्यपूर्ण वस्तु के दर्शन से हमारे नेत्रों को आनन्द प्राप्त होता है। सौन्दर्यपूर्ण भोजन को स्वीकार करने से मन में आनन्द पैदा होता है। उसी प्रकार सौन्दर्यपूर्ण काव्य के पढ़ने से भी मन में आनन्द उत्पन्न होता है। परमार्थत: उक्ति वैचित्र्य अलंकार होता है। वस्तुत: यदि साक्षात् वस्तु को कहते हैं तो वह कथामात्र है उससे चमत्कार उत्पन्न नहीं होता। जैसे - ''मम नाम देवदत:। अहं प्रतिदिनं प्रात: विद्यालयं गच्छामि'' इस प्रकार के वाक्य साक्षात् अर्थ का बोध कराते हैं। इस वाक्य में चमत्कार दिखाई नहीं देता है। चमत्कार विशिष्ट वाक्य नहीं है तो काव्य भी नहीं होता। यहाँ चमत्कार विशिष्ट वाक्य के अभाव से लोगों को आनन्द नहीं होता। उक्तिवैचित्र्य है तो उससे आनन्द होता है।

वामन ने काव्यालंकार सूत्र के आदिसूत्र में कहा है - ''काव्यं ग्राह्यमलंकारात्''। जो कुछ भी हमारे ग्राह्य होता वह काव्य है। कुन्तकाचार्य का मत है कि अलंकार की काव्यता होती है। तो यह निश्चय काव्य शरीरभूत शब्दार्थ के लोकोत्तर रमणीयत्व निष्पादक राजमार्ग का नाम ही अलंकार होता है। कोई महिला अलंकार को धारण करती है तो वह अतीव सुन्दरी प्रतीत होती है। उसी प्रकार काव्य में अलंकार होते हैं तो वह काव्य अत्यन्त प्रिय होता है। अलंकार जैसे शरीर के सौन्दर्य को बढ़ाता है वैसे ही शब्दालंकार और अर्थालंकार काव्य शरीर के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। उक्तिवैचित्र्य नहीं है तो वह काव्य ग्राह्य नहीं होता है। 'चन्द्र इव मुखम्' यह उपमा अलंकार का उदाहरण है। सामान्य अर्थ होता है कि चन्द्रमा में जैसा सौन्दर्य है वैसा ही सौन्दर्य मुख में भी है। इस वाक्य में साक्षात् वाक्यार्थ विद्यमान है। इस कारण उक्तिवैचित्र्य और गूढ़ार्थ के अभाव से इस वाक्य में चमत्कार नहीं है। अतएव काव्यत्व से ग्राह्य नहीं होता है। 'चन्द्र: इव मुखम्' यहाँ सौन्दर्य अर्थ गुप्तरूप से विद्यमान है। इस वाक्य में गूढ़ार्थ और उक्तिवैचित्र्य के विद्यमान होने से चमत्कार विलास है। अतएव इस वाक्य को सुनकर लोगों के मन में आनन्द उत्पन्न होता है। अत: वामन ने कहा। अलंकारयुक्त काव्य से क्या फल है तब कहते है - ''काव्यं सत् दृष्टार्थाखदृष्टार्थं प्रीति कीर्तिहेतुत्वात्।''

सत्काव्य हमारे आदरणीय हैं क्योंकि सत् काव्य को पढ़ने से प्रीति उत्पन्न होती है। उसका दृष्ट प्रयोजन है। पुन: सत्काव्य के पढ़ने से कीर्ति होती है। यह उसका अदृष्ट प्रयोजन है। भामह के मत में काव्य में अलंकार प्रधान ही होते हैं। अलंकार ही काव्य की आत्मा है। आत्मा के बिना शरीर व्यर्थ होता है। वैसे ही अलंकार के बिना काव्य भी व्यर्थ होता है।

पाठगत प्रश्न 25.1

1. अलंकार शब्द का भावसाधन व्युत्पत्ति से क्या विग्रह है?
2. अलंकार शब्द का करणसाधन व्युत्पत्ति से क्या विग्रह है?
3. दण्डी के मत में अलंकार का लक्षण क्या है?

4. प्राय: अलंकार कितने प्रकार के हैं?
5. शब्दालंकार का एक उदाहरण लिखिए।
6. अर्थालंकार का एक उदाहरण लिखिए।
7. किसके मत में काव्य की आत्मा अलंकार है?
8. भामह के मत में काव्य की आत्मा कौन है?
9. मम्मटानुसार अलंकार का लक्षण क्या है?
10. विश्वनाथ के अनुसार अलंकार का लक्षण क्या है?

25.4 शब्दार्थालंकार

कहीं पर शब्द और अर्थ दोनों का ही सन्निवेश विशेष विचित्रता से चमत्कार देखा जाता है। उन स्थलों में शब्द और अर्थ दोनों का ही चमत्कार विधान होने से शब्दार्थ या उभयालंकारता स्वीकार की जाती है। यहाँ शब्द और अर्थ दोनों की प्रधानता होती है। शब्द को परिवर्तन समर्थ होता है। काव्य मार्ग में पुनरूक्तवदाभास नामक एक ही अलंकार देखा जाता है।

उभयालंकार की विशेषताएँ -

1. शब्द और अर्थ की प्रधानता देखी जाती है।
2. अर्थ का परिवर्तन सहन नहीं होता।
3. शब्द का परिवर्तन समर्थ होता है।
4. काव्यमार्ग पुनरूक्तवदाभास नामक एक ही अलंकार है।

25.4.1 पुनरूक्तवदाभास

साहित्यदर्पणग्रन्थ में कविराज विश्वनाथ इसका लक्षण कहते हैं

लक्षण - **आपाततो यदर्थस्य पौनरूक्त्येन भासनम्।**
पुनरुक्तवदाभास: स भिन्नाकार शब्दग:॥

अन्वय: - आपातत: यत् अर्थस्य पौनरुक्त्या अवभासनं भिन्नाकारशब्दग: स पुनरुक्तवदाभास अलंकार स्यात्।

शब्दार्थ: - **आपातत:** = श्रवणमात्र से, यत् = जो, अर्थस्य = अर्थ का, पौनरुक्त्या = पुन उक्ति के माधयम से, अवभासनम् = प्रतीति, भिन्नाकारशब्दग: = भिन्न आकृति से शब्दगत, **स:** = वह पदवाच्य, पुनरुक्तवादाभास = पुनरुक्तवदाभास नामक:, अलंकार होता है।

टिप्पणी

सामान्यार्थः - किसी वाक्य में प्रयुक्त भिन्नाकृति शब्द समूह के श्रवण मात्र से किसी समान अर्थ की प्रतीति होती है। वह पुनरुक्ति कही जाती है। परन्तु सम्यक्रूप से वाक्यार्थ के पर्यालोचन करने के बाद किसी भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है वह ही पुनरुक्तवदाभास अलंकार होता है। पुनरुक्त के समान आभासित होता है न कि वस्तुगत पुनरुक्ति। अर्थात् सामान्यतया भिन्न आकृति से युक्त शब्द को देखने से तो समान अर्थ है यह प्रतिभासित होता है परन्तु जब शब्दों के अर्थों के विषय में सम्यक् रूप से आलोचना की जाती है तब कुछ भिन्न अर्थ प्रतीत होता है। अतएव पुनः उक्ति के समान आभासित होता है न कि वस्तुगति से पुनरूक्ति दोष है। इस प्रकार के वाक्य कथन से चमत्कार उत्पन्न होता है जिससे काव्य का सौन्दर्य बढ़ता है। इस अलंकार का नामानुसार ही लक्षण है।

उदाहरण में समन्वय - **भुजंगकुण्डली व्यक्तशशिशुभ्रांशुशीतगुः।**
जगन्त्यपि सदापायादव्याच्चेतोहरः शिवः॥

श्लोकार्थ - सर्प जिसका अलंकार, कर्पूर के समान शुभ्र किरण से युक्त, चन्द्रमा जिसके आश्रय में शोभायमान है, ऐसे शिव विपदा ग्रस्त इस संसार की रक्षा करें।

इस श्लोक में भुजंगकुण्डलादि शब्दों का भिन्नाकृति है। परन्तु भुजंग कुण्डलादि शब्दों की भिन्नाकृति होने पर आपात मात्र से सर्प यह समान अर्थ आता है। क्योंकि इन दोनों शब्दों का लोक प्रसिद्ध अर्थ सर्प है। अतएव शब्द के श्रवण मात्र से ही पुनरुक्ति भ्रम पैदा होता है। किन्तु सम्यक् रूप से समालोचना के बाद भिन्नार्थक प्रतीत होते हैं। पर्यालोचना के बाद भुजंग रूप कुण्डल है जिसका यह अन्वयार्थ आता है। इसी प्रकार शशी, शुभ्रांशुः और शीतगु इन तीन शब्दों का चन्द्रमा यह समान अर्थ सुना जाता है। इसलिए शब्दों के सुनने मात्र से भ्रमवश पुनरुक्तिदोष होता है। परन्तु वाक्यार्थ के पर्यालोचन से ज्ञात होता है कि शशी शब्द का अर्थ कर्पूर, शुभ्रांशु शब्द का श्वेत किरण तथा शीतगु शब्द का अर्थ चन्द्रमा होता है। अतः पुनरुक्तिदोष नहीं है। (सदा) पायात् और अव्यात् इन दोनों क्रियापदों का रक्षा अर्थ होता है इसलिए श्रवणमात्र से समान अर्थ आभास से पुनरुक्ति दोष होता है। किन्तु सम्यक् वाक्यार्थालोचना करने पर अपायात् अव्यात् यह विच्छेद होता है। अपाय शब्द का अर्थ मंगल होता है। अव्यात् का रक्षा अर्थ होता है। अतः पुनरुक्ति भ्रम नहीं होता। इस प्रकार उक्त शब्द के प्रथमदृष्टि पुनरुक्ति दोष होता है किन्तु पर्यायलोचन करने पर भिन्नार्थत्व प्रतीत होती है। अतः यहाँ पुनरुक्तक्दाभास अलंकार है।

शब्दालंकार में शब्द की प्रधानता होती है। शब्दालंकार में शब्द परिवर्तन असह्य होता है और शब्दार्थालंकार में शब्द परिवर्तन सह्य होता है। जैसे भुजंगकुण्डलादिशब्द के स्थान हर शिव यह शब्द प्रयोग समर्थ होता है। अतः यहाँ शब्दार्थ/उभयलंकार है।

25.5 शब्दालंकार

जहाँ श्रुतिमाधुर्य शब्दों का सन्निवेश विशेष से सम्पादित किये जाते हैं। वहाँ शब्दालंकार स्वीकार किया जाता है। मूलतः शब्दालंकार में वर्ण, पद और वाक्य की प्रधानता देखी जाती है। अतएव शब्दालंकार वर्णध्वनि, पदध्वनि और वाक्यध्वनि होता है। मूलरूप से अनुप्रास में

वर्णध्वनि है। यमक वक्रोक्ति और श्लेष आदि में पदध्वनि होती है। सर्व यमक में वाक्य ध्वनि होती है। शब्दालंकार में शब्द की प्रधानता होती है।

विशेषताएँ

1. शब्दालंकार में शब्द की प्रधानता होती है।
2. शब्दालंकार में वर्ण एवं पद की भी प्रधानता होती है।
3. शब्दालंकार में शब्द का परिवर्तन कदापि स्वीकार नहीं है।
4. शब्दालंकार में शब्दों के ही सन्निवेश से चमत्कार होता है।
5. शब्दालंकार में वर्णध्वनि, पदध्वनि और वाक्यध्वनि होता है।

25.5.1 अनुप्रास

लक्षण - कविराज विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में अनुप्रास का लक्षण कहा - ''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्''

अन्वयः - स्वरस्य वैषम्ये अपि यत् शब्दसाम्यं सः अनुप्रासः।

सामान्यार्थः - स्वर के भेद होने पर भी सदृश व्यंजन वर्ण की आवृत्ति अनुप्रासालंकार पद से वाच्य होता है। स्वर की समानता होने पर कोई चमत्कार पैदा नहीं होता है परन्तु व्यंजन वर्ण की समानता होने पर चमत्कार होता है। अतः अनुप्रास अलंकार निर्दिष्ट है। वर्ण की या वर्णसमूह की पुनः पुनः आवृत्ति होती है तो अनुप्रास अलंकार उत्पन्न होता है। केवल ध्वनि साम्य अलंकार नहीं होता है अपितु रस, रसाभास, भाव और भावाभास के उपकारकता से शब्दसाम्य होता है तो अनुप्रासालंकार उत्पन्न होता है।

अनुप्रास के भेद - अनुप्रास पाँच प्रकार का होता है - (1) छेकानुप्रास, (2) वृत्त्यानुप्रास, (3) श्रुत्यानुप्रास, (4) अन्त्यानुप्रास, (5) लाटानुप्रास।

(1) छेकानुप्रास -

लक्षण - अनुप्रास अलंकार का एक भाग छेकानुप्रास होता है उसका लक्षण है - ''छेको व्यंजन संघस्य सकृत्साम्यमनेकधा''

अन्वय - व्यंजन संघस्य सकृत् अनेकधा साम्यं छेकः।

सामान्यार्थ - अनेक व्यंजन वर्णों का स्वरूपत और क्रमशः एक बार सादृश्य होता है तो छेकानुप्रास अलंकार होता है। संघ बहुतो के समूह को कहते है। एक या दो वर्णों के मेल से अनुप्रास नहीं होता है जैसे - 'घृतच्युतांकुर' में तकार की दो बार सादृश्य में भी छेकानुप्रास नहीं होता। छेक शब्द का सामान्य अर्थ 'रसिक' होता है। रसिकजन के ही वाक्य में यह अलंकार प्रयुक्त होता है। इसलिए इसका नाम छेकानुप्रास है।

टिप्पणी

उदाहरण - **आदाय वकुल गन्धानन्धीकुर्वन् पदे पदे भ्रमरान्।**
अयमेति मन्दं मन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः॥

श्लोकार्थ - कावेरी के जल स्पर्श से पवित्र बकुल की गन्धग्राही वायु पद पर मोहग्रस्त करके मन्द-मन्द आगे बह रही है।

यहाँ गन्धान्धी में संयुक्तवर्णगन्ध की दो बार आवृत्ति हुई, कावेरीवारि में वकार एवं रकार की दो बार आवृत्ति है, पावन, पवन में पकार, वकार एवं नकार की दो बार आवृत्ति हुई। इस श्लोक में स्वरूप एवं क्रम दोनों प्रकार से आवृत्ति हुई है। अतएव छेकानुप्रास अलंकार है।

(2) वृत्त्यानुप्रास -

लक्षण - **अनेकस्यैकधा साम्यम् सकृद्वाप्यनेकधा अनेकधा।**
एकस्य सकृद् अय्येष वृत्त्यानुप्रास उच्यते।

शब्दार्थ - काव्य में बहुत से व्यंजनों का, एकध = केवल स्वरूप से, असकृत् = बार-बार, **अनेकध** = स्वरूपानुसार और क्रमानुसार से (वर्ण का पूर्वपर के क्रम से), एकस्य = एक व्यंजन का, सकृत् = एक बार, साम्यम् = समानता, वृत्त्यानुप्रासः = वृत्त्यानुप्रास अलंकार, **उच्यते** = कहा जाता है।

सामान्यार्थ - बहुत से व्यंजनों का स्वरूप से एक बार या अनेक बार आवृत्ति या व्यंजनों का स्वरूप से या क्रम से बार-बार आवृत्ति या एक व्यंजन की केवल एक बार आवृत्ति या एक व्यंजन की अनेक बार आवृत्ति होती है, उसे वृत्त्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण में लक्षण समन्वय -

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूत चूताङ्कुर,
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानाव धननक्षण,
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरभीवासराः॥

श्लोकार्थ - प्रियतमा के चिन्तन में एकाग्रता के अवसर पर प्राण के समान प्रियतमा के समागम रस के आनन्द को पाने वाले पथिकों से, प्रचुरता से उत्पन्न होने वाले मकरूद के सुगन्ध से लुब्ध भौरों से प्रकम्पित आमों की मंजरियों में क्रीड़ा करने वाले कोयलों की सूक्ष्म ध्वनियों से और कोलाहलों से कानों में ज्वर उत्पन्न करने वाले वसन्त ऋतु के वे दिन बड़े ही कष्ट से बिताये जा रहे हैं। इस श्लोक में 'रसोल्लासैरभी' पद में रेफ और सकार का एक ही प्रकार से स्वरूप से साम्य है, उसी क्रम में नहीं। अपितु पूर्व पर का भेद है। रस पद में 'र' के बाद 'स्' और सैर पद में 'स्' के बाद 'र्' है। अतएव वृत्त्यानुप्रास अलंकार है। दूसरे पाद में 'क' और 'ल' की बार-बार क्रमशः आवृत्ति हुई है। अतएव वृत्त्यानुप्रास है। प्रथम पाद में वकार और धकार की बार-बार आवृत्ति हुई है। अतएव वृत्त्यानुप्रास है। कथं कथम् इन पदों व्यंजनों की एक बार आवृत्ति है। अतएव वृत्त्यानुप्रास है।

(3) श्रुत्यनुप्रास -

लक्षण - साहित्यदर्पण में विश्वनाथ ने इसका लक्षण कहा है -

उच्चार्यत्वाद्यरेकत्र स्थाने तालुरदादिके।
सादृश्यं व्यञ्धनस्यैव श्रुत्यनुप्रास उच्यते॥

अन्वय - तालुरदादिके एकत्र स्थाने उच्चार्यत्वात् व्यंजनस्य एव यत् सादृश्यं तत् श्रुत्यनुप्रास उच्यते।

शब्दार्थ - एकत्र = एक ही स्थान पर (उच्चारण में), तालुरदादिके = तातुदन्तादिक स्थान पर, उच्चार्यत्वात् = उच्चारित होने से, व्यंजजनस्यैव = केवल व्यंजनवर्ण की, सादृश्यम् = समानता, श्रुत्यानुप्रास = श्रुत्यानुप्रास नामक अलंकार, उच्यते = कहा जाता है।

सामान्यार्थ - तालुदन्तादि समान उच्चारण स्थान से उच्चारित व्यंजन वर्णों की जब समानता होती है तो वह श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय -

दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्तिं दृशैव याः।
विरूपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुमो वामलोचनाः॥

श्लोकार्थ - शिव की दृष्टिपात से कामदेव भस्मीभूत हो गया, जिसकी दृष्टि से भस्मीभूत कामदेव पुनः जीवित हो गया। उस त्रिनयनविजयिनी सुनयना रमणी की स्तुति करता हूँ। जीवयन्ति, याः, जयिनीः इत्यादि में जकार व यकार का एक से अधिक बार प्रयोग है। दोनों वर्णों का तालु उच्चारण स्थान है। ''इचुयशानां तालुं'' अतएव जकार, यकार दोनों का तालु समान उच्चारण स्थान होने से श्रुत्यनुप्रास अलंकार है।

पाठगत प्रश्न 25.2

11. शब्दार्थालंकार में शब्दपरिवर्तन संभव है या नहीं?
12. शब्दार्थालंकार का एक उदाहरण लिखिए।
13. पुनरुक्तवदाभासालंकार का लक्षण बताइए।
14. शब्दालंकार में शब्द का परिवर्तन संभव है या नहीं?
15. शब्दालंकार वाक्य ध्वनि होता है या नहीं?
16. अनुप्रास अलंकार का लक्षण लिखिए।
17. अनुप्रास अलंकार कितने प्रकार का है?
18. छेकानुप्रास का लक्षण क्या है?

टिप्पणी

19. छेक शब्द का अर्थ क्या है?

20. वृत्त्यनुप्रास अलंकार का लक्षण क्या है?

21. श्रुत्यनुप्रासालंकार का लक्षण क्या है?

(4) अन्त्यानुप्रास -

लक्षण - साहित्यदर्पण में विश्वनाथ अन्त्यानुप्रासालंकार का लक्षण कहते है कि -

व्यञ्जनं चेद्यथावस्थं सहाद्येन स्वरेणतु।
आवर्त्यतेऽन्त्ययोज्यत्वादन्त्यानुप्रास एव तत्॥

अन्वय - यथावस्थं व्यंजनं चेत् आद्येन स्वरेण सह आवर्तते अन्त्ययोज्यत्वात् तत् अन्त्यानुप्रास उच्यते।

सामान्यर्थः - पद या पाद के अन्त में स्थित व्यंजनवर्ण, अनुस्वार या विसर्ग के साथ स्वरवर्णादि से युक्त होता हुआ रहता है। उसी प्रकार यथासंभव उस वर्ण के आदि स्थित स्वर के साथ आवृत्ति होती है तो अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है। यह अलंकार पाद या पद के अन्त में होता है।

जैसे - **केशः काशस्तबकविकासः कायः प्रकटितकरभविलासः।**
चक्षुर्दग्धवराटककल्पं त्यजति नो चेत् काममनल्पम्॥

इस श्लोक के प्रथमपाद के अन्त में आसः (विकासः) है। द्वितीय पाद के अन्त में आसः (विलासः) है, तृतीय पाद के अन्त में अल्पम् (कल्पम्) और चतुर्थ पाद के अन्त में अल्पम् है। अतएव आद्यस्वर के साथ यथावस्थित व्यंजन का पुनः उच्चारण हुआ है। अतः अन्त्यानुप्रास अलंकार है। इस श्लोक में पदान्त अन्त्यानुप्रास है।

(5) लाटानुप्रास -

लक्षण - कविराज विश्वनाथ ने लाटानुप्रास का लक्षण कहा है
''शब्दार्थयोः पौनरुक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः। लाटानुप्रासः इत्युक्तः॥''

अन्वयः- तात्पर्यमात्रतः भेदे शब्दार्थयोः पौनरुक्त्यं स लाटानुप्रासः इति उक्तः अस्ति।

सामान्यार्थ - आपात मात्र से शब्द और अर्थ की पुनरुक्ति लक्षित होती है। परन्तु वाग्यार्थबोध होने पर अर्थ भेद प्रतीति होती है। वह लाटा अनुप्रास होता है। पूर्वोक्त वृत्त्यनुप्रास आदि वर्णाभितिक हैं। यह लाटानुप्रास तो शब्दभित्तिकः है। शब्दगत समानता लाटानुप्रास में दिखाई देती है। यहाँ प्रथमदृष्टि से अर्थ की समानता भी दिखाई देती है। परन्तु वाक्यार्थ बोध होने पर अर्थभेद होता है।

उदाहरण में लक्षणसमन्वय -

धन्यः स एव तरुणो नयने तस्यैव नयने।
युवजनमोहनविद्या भवितेयं अस्य सम्मुखे सुमुखी॥

श्लोकार्थ - युवाजनों को सम्मोहित करने वाली, विद्यास्वरूपवाली यह कन्या जिसके साथ रहती है, सब वह युवक धन्य होता है। इसका नयन ही नयन सार्थक है। यहाँ नयन शब्द की आवृत्ति हुई है। प्रथम दृष्ट्या से भिन्नार्थक नहीं है। किन्तु वाक्यार्थ बोध होने पर अन्तिम नयन शब्द का सार्थक अर्थ है। यहाँ आपात दृष्टि से आवृत्त नयन शब्द का समान अर्थ है। परन्तु सम्यक् दृष्टि से पर्यालोचन से ज्ञात होता है कि दोनों शब्दों का अर्थ भिन्न होने से लाटानुप्रास है।

25.6 यमकालंकार

लक्षण - विश्वनाथ ने यमक अलंकार का लक्षण कहा -

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिः यमकः विनिगद्यते॥

अन्वय- अर्थे सति पृथगर्थायाः स्वरव्यंजन संहतेः तेन क्रमेण एव आवृत्तिः यमकं विनिगद्यते।

सामान्यार्थ - अर्थ के विद्यमान होने पर भिन्नार्थ विशिष्टता से, अर्थ के अविद्यमान होने पर निर्थकता से स्वरव्यंजन वर्णों की एक बार उच्चारण होने के बाद पूर्वक्रमानुसर से पुनः उच्चारित होता है तो यमक अलंकार होता है। इस अलंकार में कहीं-कहीं पर पदों का अर्थ होता है, कहीं पर अर्थ नहीं होता, कहीं पर एक पद अर्थवाला और दूसरा निरर्थक होता है। अतः अर्थ के होने पर प्रयुक्त होता है। इस अलंकार में कहीं एकदेशस्थित वर्णों की आवृत्ति होती है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय -

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपंकजं।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोहरैः॥

श्लोकार्थ - श्रीकृष्ण ने सम्मुख पुष्प समृद्ध सुरभि वसन्तकाल को देखा। इस वसन्त में पलाश वृक्ष समूह नवीन पत्रों से सुसज्जित है। विकसित कमल पराग से आकीर्ण है। रौद्र के उत्ताप से सुकुमार लता अग्रभाग दुःखी है।

इस श्लोक में पलाश और सुरभि इन दो शब्दों की आवृत्ति हुई है। भिन्नार्थकता से दो बार आवृत्ति हुई। यह प्रथम पलाश का अर्थ 'पत्र' है द्वितीय पलाश शब्द का अर्थ पलाश वृक्ष विशेष है। प्रथम सुरभि शब्द का अर्थ सुगन्ध है और द्वितीय सुरभि शब्द का अर्थ वसन्तकाल है।

इस प्रकार भिन्न अर्थ वाले पलाश और सुरभि पदों की आवृत्ति हुई है। लतान्त और पराग इन दो पदों की भी आवृत्ति हुई है। इस श्लोक में प्रथम लतान्त और द्वितीय पराग शब्द निरर्थक है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

टिप्पणी

25.7 वक्रोक्त्यलंकार

लक्षण - आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में वक्रोक्ति अलंकार का लक्षण कहा -

अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्यादि।
अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिः ततो द्विधा॥

अन्वय - अन्यस्य अन्यार्थकं वाक्यम् अन्यः यदि श्लेषेण काक्वा वा अन्यथा योजयेत् तदा सा वक्रोक्तिः नाम अलंकार स्यात्॥

सामान्य अर्थ - वाक्य में किसी अर्थ को उद्देश्य करके वक्ता कुछ वाक्य कहता है परन्तु श्रोता वाक्य को सुनकर श्लेष या काकु से भिन्न अर्थ ग्रहण करता है तब वक्रोक्ति होता है। अर्थात् वक्ता के इष्ट अर्थ का परित्याग कर श्लेष अथवा काकु से कुछ भिन्न अर्थ ग्रहण होता है।

वक्रोक्ति दो प्रकार की होती है। श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति। श्लेष से अर्थात् अनेकार्थ की सहायता से जो वक्रोक्ति होती है वह श्लेष वक्रोक्ति और काकु से अर्थात् स्वरादि की सहायता से जो वक्रोक्ति होती है वह काकु वक्रोक्ति होती है जैसे श्लेष वक्रोक्ति का उदाहरण में लक्षण समन्वय -

के यूयं, स्थल एव सम्प्रति वयम्, प्रश्नो विशेषाश्रयः।
किं ब्रूते विहगः, स वा फणिपतिर्यत्रास्ति सुप्तो हरिः॥

श्लोकार्थ - 'के यूयम्' यह वक्ता ने प्रश्न किया। परन्तु श्रोता 'क' शब्द का 'जल' अर्थ ग्रहण करता है क्योंकि 'क' शब्द जलवाचक एवं जलवाचक 'क' का सप्तमी एकवचन में 'के' रूप होता है। तब श्रोता कहता है हम स्थल पर ही है। वक्ता ने समझा कि श्रोता मेरे वाक्य का अर्थ नहीं जान पाया। वक्ता स्पष्टतया कहता है कि प्रश्न विशेषाश्रय हैं अर्थात् प्रश्नवाचक 'क' शब्द को स्वीकार करके मेरा प्रश्न है। श्रोता विशेष शब्द को तोड़कर (विच्छेद करके) श्लेष से अर्थ प्रतिपादित करता है वि शब्द का अर्थ पक्षी और शेष शब्द का अर्थ सर्प है। श्रोता श्लेष से प्रश्न का अर्थ समझकर उत्तर देता है कि क्या कहते हो, वह पक्षी या फणिपति (विष्णु) शेष जहाँ हरि सोते हैं। अतः यहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार है।

काकुवक्रोक्ति का उदाहरण -

काले कोकिलवाचाले सहकारमनोहरे।
कृतागसः परित्यागात् तस्याः चेतो न दूयते॥

श्लोकार्थ - कोयल जब वाचाल होती है, आम्र मुकुल जब विकसित होते हैं उस वसन्तकाल में अपराध करने वाले पति का परित्याग करके सखि का चित्त दुःख ग्रस्त नहीं होता है यह सामान्य अर्थ है।

परन्तु काकु से विपरीत अर्थ आता है। वसन्तकाल में जब कोयल उन्मत्त हो, आम्रमुकुल विकसित हो, उस वसन्त ऋतु में प्रिय के साथ प्रियतमा का आलिंगन में अत्यन्त आग्रह होता

है। वसन्त काल में प्रिय कभी अपराध करता है तो भी प्रियतमा उस प्रिय का परित्याग नहीं करती। अर्थात् वसन्तकाल में प्रियविरह में प्रियतमा को अत्यन्त दु:ख होता है। इस श्लोक में किम् प्रश्नवाचक पद है। यह चिन्तन करके भिन्नस्वर से यह श्लोक वक्तव्य है।

'श्लिष्टै: पदै: अनेकार्थाभिधने श्लेष इष्यते' अर्थात् अनेकार्थक वाचक पद ही श्लिष्ट पद होता है। एकबार उच्चारित पद। अनेकार्थ का वाचक होता है। यह श्लेषालंकार आठ प्रकार का होता है। 1. वर्णगत, 2. प्रत्ययगत, 3. लिंगगत, 4. प्रकृतिगत, 5. पदगत, 6. विभक्तिगत, 7. वचनगत और 8. भाषागत। साहित्यदर्पण में कविराज विश्वनाथ ने कारिका में कहा -

श्लिष्टै: पदैरनेकार्थाभिधने श्लेष इष्यते।
वर्णप्रत्ययलिंगानां प्रत्ययो: पदयोरपि॥
श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टध च स:॥

विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में आठ भेद श्लेषलंकार के प्रतिपादित किये हैं। प्रत्येक की उदाहरण पूर्वक समालोचना की है। परन्तु यह सामान्यतया केवल श्लेषालंकार की विषय चर्चा निहित है।

पाठगत प्रश्न 25.3

22. अन्त्यानुप्रासालंकार का लक्षण क्या है?

23. लाटानुप्रास का लक्षण क्या है?

24. यमक अलंकार का लक्षण क्या है?

25. वक्रोक्ति अलंकार का लक्षण क्या है?

26. वक्रोक्ति कितने प्रकार का है?

27. श्लेष किसे कहते है?

28. श्लेषालंकार के भेद कितने हैं?

पाठसार

इस पाठ में शब्दार्थमय काव्य शरीर के शोभाकारक अलंकारों का प्रतिपादन किया है। मूलत: **अलंकार तीन प्रकार के होते हैं** - 1. शब्दार्थालंकार, 2. शब्दालंकार, 3. अर्थालंकार। शब्दार्थालंकार में शब्द और अर्थ दोनों की प्रधानता होती है। काव्यमार्ग में पुनरुक्तवदाभास नामक एक ही शब्दार्थालंकार है। अनुप्रास यमक वक्रोक्ति शब्दालंकार हैं। उनमें अनुप्रास पाँच प्रकार का होता है - 1. छेका, 2. वृत्ति, 3. श्रुति, 4. अन्त्य, 5. लाटा। पाँच प्रकार के अनुप्रास के लक्षण व उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। वक्रोक्ति अलंकार दो प्रकार का है। 1. श्लेषवक्रोक्ति, 2. काकुवक्रोक्ति। भिन्नकण्ठध्वनि से कथन काकु होता है। अनेकार्थ शब्दों के श्लिष्ट होने पर

टिप्पणी

श्लेष होता है। एक बार उच्चारित पद अनेकार्थ का वाचक होता है। यह श्लेष आठ प्रकार का है। इस प्रकार वाक्य में अलंकार है तो काव्य सुन्दर होता है। सौन्दर्य ही अलंकार होता है। वामन ने कहा है- ''काव्यं ग्राह्यमलंकारात्'' जैसे लोक में अलंकार आदि शोभा को बढ़ाकर शरीर को उपकृत करते हैं। उसी प्रकार शास्त्र में भी अलंकार शब्दार्थों की शोभा बढ़ाकर रसादि को उपकृत करते हैं।

आपने क्या सीखा

- शब्दालंकार का सामान्य परिचय जाना।
- उनके भेद तथा उपभेदों को जाना।
- कवि निर्मत अलंकारों को पहचानना जाना।
- उदाहरण में लक्षण का समन्वय कर पाना जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. अलंकार के विषय में लघु निबन्ध लिखिए।
2. अलंकार का लक्षण लिखिए।
3. अलंकार का प्रयोजन लिखिए।
4. अलंकारों के भेदों को विस्तार से लिखिए।
5. पुनरुक्तवदाभासालंकार का वर्णन कीजिए।
6. शब्दालंकार के विषय में लघु प्रबन्ध लिखिए।
7. अनुप्रास के भेदों को प्रदर्शित कीजिए।
8. छेकानुप्रास अलंकार का वर्णन कीजिए।
9. वृत्त्यानुप्रास अलंकार का वर्णन कीजिए।
10. श्रुत्यनुप्रास अलंकार का वर्णन कीजिए।
11. अन्त्यानुप्रास अलंकार का वर्णन कीजिए।
12. लाटानुप्रास अलंकार का वर्णन कीजिए।
13. यमक अलंकार का वर्णन कीजिए।
14. वक्रोक्ति अलंकार का वर्णन कीजिए।

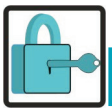

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1

1. अलंकृतिः अलंकार।
2. अलंक्रियते अनेन।
3. काव्यशोभाकरान् धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते।
4. दो प्रकार।
5. अनुप्रासालंकार।
6. उपमालंकार।
7. भामह का।
8. अलंकार।
9. उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽगंद्वारेण जातुचित्।
   हारादिवदलंकारास्ते ऽनुप्रासोपमादयः।।
10. शब्दार्थयोरास्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः।
    रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्तेऽंगदादिवत्।।

25.2

11. संभव है
12. पुनरुक्तवदाभासालंकार ।
13. आपाततो यदर्थस्य पौनरूक्त्यावभासनम्।
    पुनरुक्तवदाभासः स भिन्नाकार शब्दगः।।
14. समर्थ नहीं।
15. नहीं।
16. ''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्''।

टिप्पणी

17. पंचविध।

18. छेको व्यंजन संघस्य सऽत्साम्यमनेकध''।

19. रसिक।

20. अनेकस्यैकधा साम्यम् असऽद्वापि अनेकधा।

    एकस्य सकृद् अय्येष वृत्त्यानुप्रास उच्यते।

21. उच्चार्यत्वाद्यरेकत्र स्थाने तालुरदादिके।

    सादृश्यं व्यञ्नस्यैव श्रुत्यनुप्रास उच्यते।।

25.3

22. व्यञ्जनं चेद्यथावस्थं सहाद्येन स्वरेणतु।

    आवर्त्यतेऽन्त्ययोज्यत्वादन्त्यानुप्रास एव तत्।।

23. शब्दार्थयोः पौनरुक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः। लाटानुप्रासः इत्युक्तः।।''

24. सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः।

    क्रमेण तेनैवावृत्तिः यमकः विनिगद्यते।।

25. अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेत् यदि।

    अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिः ततो द्विध।।

26. द्विविध।

27. 'श्लिष्टैः पदैः अनेकार्थाभिधने श्लेष इष्यते'।

28. आठ प्रकार।